Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

पुराणों में वर्णित वास्तुविज्ञान: वर्तमान समय में प्रासंगिकता

डा0 चन्द्रप्रभा गंगवार

असि0 प्रोफेसर, संस्कृत, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर पीलीभीत

शोधसारांश: संस्कृत वाङ्मय में वास्तुविज्ञान की प्राचीन परम्परा विद्यमान है। संसार के प्राचीन ग्रंथ वेदों में इस विज्ञान के मूल सूत्र प्राप्त होते हैं। सांकेतिक रूप से ऋग्वेद में गृह निर्माण की प्रक्रिया वर्णित है। यजु-साम-अथर्व संहिता, शतपथब्राह्मण, आरण्यक,छान्दोग्योपनिषद, कौषीतकी आदि उपनिषदों, पास्कर गृह्यसूत्र, बैखानस धर्मसूत्र, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में वास्तु विज्ञान के सूत्र प्राप्त होता है। पुराण भारतीय संस्कृति व सभ्यता का वह आधार स्तम्भ है जिस पर आधुनिक विश्व का विकास प्रतिष्ठित है। है। उत्तरवैदिक साहित्य में वास्तु विज्ञान का वर्णन विशद रूप से प्राप्त होता है। अष्टादश पुराणों में अनेक अध्यायों में वास्तुविज्ञान पर गहन विमर्श व विवरण प्राप्त है। सहस्रों वर्षों से आचार्य परम्परा इस विज्ञान के क्रमबद्ध विकास के लिये प्रयत्नशील थी। ''वास्तु'' शब्द निवास अर्थ वाली 'वस्' धातु में 'तुन' प्रत्यय से निष्पन्न होता है। वास्तु शब्द का अर्थ निवास योग्य स्थल, भूखण्ड व गृह है। यजुर्वेद संहिता में 'वास्तु' का अर्थ 'यज्ञवास्तु' है। आपस्तम्ब श्रौतसूत्र व पारस्करगृहसूत्रादि ग्रन्थों में 'वास्तु' शब्द सामान्यतया 'आवास' के अर्थ में प्रयुक्त है । रामायण-महाभारत में वास्तु शब्द भवन निर्माण का बोधक है। पुराणों में विशेष रूप से मत्स्यपुराण में 'वास्तु' शब्द का प्रयोग देवताओं के निवास स्थान के अर्थ में प्रयुक्त है । भौतिकवादी इस युग में व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा सम्पन्न गृहनिर्माण की आवश्यकता है। अनियोजित रूप से बने भवन व आवास व्यक्ति को ''वास्तुशास्त्र'' शब्द वर्तमान समय में अत्यन्त प्रचलित है। परन्तु सूक्ष्म तथ्या के अन्वेषण की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पौराणिक वास्तु विज्ञान को राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुधीजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा जिससे समसामयिक भवन व आवास निर्माण में आने वाली चुनौतियों का उचित समाधान अन्वेषित किया जा सके। हमारे समक्ष वर्तमान समय में अल्प धन, अल्पस्थान में गृहनिर्माण (आवास निर्माण) एक चुनौती है। वास्तुविज्ञान के ज्ञान के अभाव में भवन निर्माण में इस प्रकार की त्रुटियाँ हो जाती हैं जिसके गम्भीर परिणाम होते हैं।

Keywords: वास्तुविज्ञान, वास्तुशास्त्र, पुराण, मानसिक, भवन ,निर्माण, दिशाओं, मत्स्य पुराण स्मृतियां, अग्नि पुराण।

भारतीय ज्ञान-विज्ञान व संस्कृति के अवलोकन के लिए वर्तमान समय में पुराणों के अनुशीलन की महती आवश्यकता है। पुराण भारतीय संस्कृति व सभ्यता का वह आधार स्तम्भ है जिस पर आधुनिक विश्व का विकास प्रतिष्ठित है। पारम्परिक ज्ञान विज्ञान की वर्तमान समय में पुनः अन्वेषण की आवश्यकता है। वर्तमान समय में भी ज्योतिष और वास्तुशास्त्र में सामान्य जन का विश्वास है। ''आवास'' प्रत्येक व्यक्ति की मूल आवश्यकता है। साथ ही एक स्वगृह होना प्रत्येक व्यक्ति का स्वप्न भी होता है। वर्तमान समय में अनियोजित रूप से नगरों का विकास व भवनों का निर्माण एक चुनौती बन गया है। नगरों की ओर ग्रामीण जनों का पलायन इस समस्या का कारण है। भौतिकवादी इस युग में व्यक्ति को सकारात्मक ऊर्जा सम्पन्न गृहनिर्माण की आवश्यकता है। अनियोजित रूप से बने भवन व आवास व्यक्ति को चिन्ता, उन्माद, संकट व अशान्ति से युक्त कर देते हैं। 'आवास' के महत्व को ध्यान में रखकर अष्टादश पुराणों में नगर, मन्दिर, प्रासाद, गृह निर्माण के सुनियोजित विकास की क्रमबद्ध अवधारणा वर्णित

हमारे तनावपूर्ण जीवन में, मानसिक स्वास्थ्य समग्र कल्याण का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने और हमारे जीवन में संतुलन बनाए रखने के लिए एक सामंजस्यपूर्ण जीवन वातावरण बनाना आवश्यक है। वास्तु शास्त्र, वास्तुकला और डिजाइन का प्राचीन भारतीय विज्ञान, एक सकारात्मक और पोषित स्थान बनाने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और दिशानिर्देश प्रदान करता है। व्यक्ति जहाँ निवास करता है। वहाँ के वातावरण व ऊर्जा का प्रभाव उसके मन-मस्तिष्क व स्वास्थ्य पर पड़ता है। ''गृह'' वह स्थान है जहाँ व्यक्ति हर्ष, आनन्द व शान्ति की अनुभूति प्राप्त करता है। जहाँ निवास करने

Received **05 August 2025**; Accepted **20 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

से उसमें सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। प्रसन्नचित हदय सम्पन्न व्यक्ति प्रत्येक कार्य में सफल तो होता ही है, साथ ही वह अपने आस-पास वाले व्यक्ति व वातावरण को आनन्दित करता है। इन्हीं विचारों को केन्द्र में रखकर अष्टादश पुराणों में 'वास्तुविज्ञान' पर गहन विमर्श किया गया है। वास्तु शास्त्र' ने घरों को सावधानीपूर्वक डिजाइन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण दिशानिर्देश दिए हैं, जो बीमारी, मानसिक पीड़ा और नकारात्मक ऊर्जा को रोकने में मदद करते हैं और अच्छे स्वास्थ्य और मन की शांति को बढ़ावा देते हैं।

''वास्तुशास्त्र'' शब्द वर्तमान समय में अत्यन्त प्रचलित है। परन्तु सूक्ष्म तथ्यों के अन्वेषण की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पौराणिक वास्तु विज्ञान को राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुधीजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा जिससे समसामयिक भवन व आवास निर्माण में आने वाली चुनौतियों का उचित समाधान अन्वेषित किया जा सके।

''वास्तु'' शब्द निवास अर्थ वाली 'वस्' धातु में 'तुन' प्रत्यय से निष्पन्न होता है। वास्तु शब्द का अर्थ निवास योग्य स्थल, भूखण्ड व गृह है। यजुर्वेद संहिता में 'वास्तु' का अर्थ 'यज्ञवास्तु' है। आपस्तम्ब श्रौतसूत्र व पारस्करगृहसूत्रादि ग्रन्थों में 'वास्तु' शब्द सामान्यतया 'आवास' के अर्थ में प्रयुक्त है। रामायण-महाभारत में वास्तु शब्द भवन निर्माण का बोधक है। पुराणों में विशेष रूप से मत्स्यपुराण में 'वास्तु' शब्द का प्रयोग देवताओं के निवास स्थान के अर्थ में प्रयुक्त है। यथा - **''निवासात् सर्वदेवानां वास्तुरित्यभिधीयते।'' (मत्स्यपुराण 251/14)**

उत्तरवैदिक साहित्य में वास्तु विज्ञान का वर्णन विशद रूप से प्राप्त होता है। अष्टादश पुराणों में अनेक अध्यायों में वास्तुविज्ञान पर गहन विमर्श व विवरण प्राप्त है। सहस्रों वर्षों से आचार्य परम्परा इस विज्ञान के क्रमबद्ध विकास के लिये प्रयत्नशील थी। मत्स्यपुराण के अनुसार भृग-अत्रि वशिष्ठ-विश्वकर्मा-मय-नारद-नग्नजित्-विशालक्ष-पुरन्दरनन्दीश-शौनक-गर्ग-वासुदेव-अनिरूद्ध-शुक्र-बृहस्पति-अश्विनकुमार ने वास्तुविज्ञान की विस्तृत व्याख्या की। (मत्स्यपुराण 252/2-4) अग्निपुराण में वास्तुविज्ञान के प्रवर्तकों की संख्या 25 बताई है। यद्यपि सभी पुराणों में वास्तुशास्त्र सम्बन्धी सूत्र प्राप्त होते हैं, तथापि अधोलिखित पुराणों में विषयगत सामग्री की अधिकता है-

1.मत्स्यपुराण - इसमें स्थापत्य कला व वास्तुविज्ञान का अति विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है। अध्याय संख्या 252, 253, 254, 255, 257, 258, 259, 270, 273, 292 में वास्तुविज्ञान संबंधी सामग्री उपलब्ध है। गृह, मन्दिर, प्रासाद, प्रतिमा इत्यादि के लक्षणों पर चर्चा प्राप्त होती है।

2.अग्निपुराण - के षोडश अध्यायों में नगरवास्तु, प्रासादवास्तु, प्रतिमावास्तु वैशिष्ट्य वर्णन उपलब्ध होता है।

3.गरूड़ पुराण - के दो अध्यायों में आवास-सैन्य-देवालय वास्तु की विस्तारपूर्वक चर्चा प्राप्त होती है। इसमें पञ्चवधि युक्त प्रासाद वैराज-पुष्पक-कैलाश-मालिका -त्रिविष्टप का विवरण प्राप्त होता है।

4.स्कन्दपुराण - के तीन अध्यायों में कक्ष, मण्डप निर्माण सम्बन्धी विवरण प्राप्त होता है।

5.विष्णुधर्मोत्तरपुराण के 24 अध्यायों में वास्तुविज्ञान का विशद विवेचन प्राप्त होता है। इसमें भूरचना, भूपरीक्षण, वास्तुपुरूष इत्यादि का विवरण प्राप्त होता है। यथा-

गर्भे च कुसुमं यस्यां च म्लानम् उपगच्छति।
न निर्माणमाप्नोति यस्यां दीपश्च भार्गव।
उदकं च तया यस्यां शीघ्र राम न जीर्यते।
सा प्रशस्ता क्षितिस्तस्यां निवेशं कारयेद् बुधः
(विष्णुधर्मोत्तरपुराण खण्ड-229/6-7)

Received **05 August 2025**; Accepted **20 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

मत्स्यपुराण के 254वें अध्याय में भवननिर्माण का भेद सहित वर्णन उपलब्ध होता है। चतुशाल - द्विशाल-एकशाल- इसप्रकार चार प्रकार के भवनों का विवरण उपलब्ध होता है। चार द्वार वाले सर्वतोमुख चतुशाल भवन सभी के लिए कल्याणकारी होता है। देवता व राजा दोनों के लिए यह भवन प्रसंशनीय है। वास्तु विज्ञान का सबसे अधिक विस्तार से विवेचन मत्स्य पुराण में उपलब्ध होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मत्स्यपुराण किसी विशिष्ट वास्तुशास्त्रीय निबंध का सार अपने अध्यायों में प्रस्तुत करता है। इस पुराण में चार विषयों का विवेचन उपलब्ध होता है। वास्तु विद्या के मूल सिद्धांत, स्थान का चुनाव ,देव मूर्ति निर्माण ,मंदिर व राज प्रासादों की रचना।

मत्स्यपुराण के 254 अध्याय में चार प्रकार के भवनों का विवरण उपलब्ध होता है।पश्चिम में द्वाररहित भवन नन्द्यवर्त, दक्षिण में द्वार रहित वर्धमान ,पूर्व में द्वार रहित स्वस्तिकम और उत्तर में द्वार रहित भवन रुचिकम कहलाता है। [1] उत्तरशाला विहीन त्रिशाल भवन वृद्धि वर्धक बहुपुत्र ,धन-धान्य वृद्धि देने वाला, पूर्व शाला रहित भवन सुक्षेत्र कहलाता हैऔर यश आयुवर्धक व शोक, मोह का विनाश करने वाला होता है । दक्षिण शालाहीन विशाल भवन कुल नाशक और सभी व्याधियों का कारक होता है। पश्चिम शालाहीन भवन पक्षघ्न कहलाता है। और यह भवन मित्र बंधु नाशक ,सभी प्रकार के भय को बढ़ाने वाला होता है। दक्षिण पश्चिम शाला वाला भवन धन-धान्य प्रदान करने वाला होता है। पश्चिमउत्तर शाला भवन राजा व अग्नि भय प्रदान करने वाला होता है। वह कुल का नाश करने वाला होता है। उत्तर पूर्व शाला भवन अकाल मृत्यु भय प्रदान करने वाला होता है। पूर्व दक्षिण शाला भवन शस्त्र भयवर्धक व पराजय प्रदान करने वाला होता है। विविधशाला वाले भवनों की विस्तार से जानकारी पुराणों में उपलब्ध होती है।

मत्स्यपुराण में राजा ,युवराज, सेनापति सामंत ,अमात्य इत्यादि के लिए अलग-अलग पांच प्रकार के भवनों का विवरण प्राप्त होता है। इसी प्रकार शिल्पी ,वैश्या के लिए पांच प्रकार के भवनों का विवरण प्राप्त होता है , दूती, कर्मकार शिक्षक, पुरोहित, ज्योतिषी आदि के लिए भी पांच प्रकार के भवनों का विवरण प्राप्त होता है। पौराणिक भवनों में वीथिका (बरांडा)का भी उल्लेख प्राप्त होता है।भवन के त्रिभाग में (⅓ एक तिहाई) इसका आगे वाला भाग वीथिका कहलाता है। [2] मत्स्य पुराण का 255 वा अध्याय स्तंभ माननिर्णय के ऊपर आधारित है। [3]

मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि ज्योतिषी, गुरू, वैद्य, सभापति, पुरोहित इन सभी के पांच प्रकार के भवनों की चैड़ाई 40 हाथ की होनी चाहिए। शेष सभी की कम से चार-चार हाथ कम होती है-

दैवज्ञगगुरूवैद्यानाम् सभास्तारपचरोधताम तेषामपि प्रवश्यामि तथा भवन पंचकम ।

चत्वारिंशत तु विस्तार चतुर्भिमधेकामन पंच स्वतेषु दैर्ध्यं च षडभागेनाधिकम् भवेत ।। [4]

अग्निपुराण में वास्तु विद्या पर 16 अध्यायों में वास्तु विज्ञान के विविध अंगों पर प्रकाश डाला गया है। इस पुराण में पाषाण मूर्ति कला की प्रधानता है। अग्नि पुराण में वर्णित पांच प्रमुख प्रासादों में वैराग्य नामक प्रसाद के भेदों में मेरू तथा मंदर का उल्लेख प्राप्त होता है। मेरू तथा मंदर प्रासाद चैकोर होते हैं। [5]

अग्नि पुराण के 106वें अध्याय में कहा गया है कि वास्तु भूमि के पूर्व दिशा में श्रृंगार कक्ष आग्नेय कोण में पाक गृह (रसोई घर) दक्षिण में शयन गृह ,नैऋत्य कोण में शस्त्रागार, पश्चिम में भोजन गृह , वायव्य कोण में धान्य संग्रह, उत्तर दिशा में धनागार तथा ईशान में देवग्रह बनवाना चाहिए -

Received 05 August 2025; Accepted 20 September 2025. Available online: 30 September 2025. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

पूर्वायां श्रीगृहं प्रोक्तमाग्नेय्या वै महानसम शयनं दक्षिणस्यान्तु नैऋत्यत्यामायुधाश्रयम।

भोजनं पश्चिमायान्तु वायव्यां धान्यं संग्रहरू उत्तरे द्रव्यं संस्थानमैशान्यां देवता गृहम ॥[6]

अग्नि पुराण में वर्णित है कि वास्तु पुरुष का शिर ईशान कोण में स्थित होता है। ईशान कोण दिशा अत्यंत उत्तम व पवित्र मानी जाती है।[7] अग्नि पुराण में प्रसाद का तात्पर्य मंदिर से है। अनेक अध्यायों में प्रसाद वस्तु का विवरण प्राप्त होता है।[8] नगर वस्तु का वर्णन करते हुए अग्नि पुराण में कहा गया है कि नगर को आयताकार होना चाहिए तथा नगर के चारों ओर चाहर दिवारी बनानी चाहिए।[9]

हरिवंशपुराण के अंतर्गत द्वारवती के निर्माण का प्रयास भारतीय वास्तु कला के उत्कृष्ट रूप का परिचायक है।द्वारवती में नगर का निर्माण रोहिणी नक्षत्र में शुभ दिन में होता है।[10] शुभ मुहूर्त निश्चित हो जाने के बाद शिल्पी तथा सूत्रधारी स्थपतियों को आमंत्रित किया जाता है।[11] हरिवंश पुराण में द्वा रका की स्थापना के समय वर्णित ब्रह्मा,चार प्रारंभिक देवता तथा चार वास्तु देवताओं के स्थान निर्धारण एवं पूजन का प्रसंग लगभग सभी ग्रंथों में मिलता है।[12] हरिवंश पुराण में नौकाओं के ऊपर निर्मित प्रासाद का वास्तु शास्त्रीय दृष्टिकोण से वर्णन उपलब्ध होता है। नौकाओं पर निर्मित भवनों के वर्णन मत्स्य पुराण ,अग्नि पुराण ,गरुड़ पुराण, भविष्य पुराण में भी उपलब्ध होते हैं।[13]

नारदपुराण में वास्तु विज्ञान का उल्लेख अग्नि पुराण, मार्कंडेय पुराण तथा गरुड़ पुराण की भांति परंपरावश प्राप्त होता है।[14]

स्कंदपुराण में वास्तु विज्ञान का विषय तीन बड़े-बड़े अध्यायों में प्राप्त होता है।[15] वायु पुराण में एक अध्याय के अंतर्गत वास्तुविज्ञान का विस्तार से विवेचन किया गया है।[16] लिंग पुराण में वास्तु विज्ञान का संक्षिप्त विवरण प्राप्त होता है।[17] बृहदवास्तु माला में सामान्य प्रासाद का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

यो विस्तारोभवेद्यस्य द्विगुणा तत्समुन्नतिः। उच्छ्रायाद्यस्तृतीयांशस्तेन तुल्या कटिः स्मृता ॥[18]

आज जब सम्पूर्ण विश्व हमारी देवभाषा व पारम्परिक ज्ञान विज्ञान को आशा की नूतन दृष्टि से अवलोकित कर रहा है तो आवश्यकता नव अनुसन्धान-अन्वेषण व चिंतन की है। नगर, मन्दिर, प्रासाद, गृह की संरचना का प्रभाव निश्चय ही उसमें रहने वाले जनों के आचार-विचार, व्यवहार को प्रभावित करता है। वास्तुविज्ञान के अनुसार निर्मित आवास में रहने वाले व्यक्ति अधिक सुखी, स्वस्थ, समृद्ध होते हैं। वास्तु के अनुसार निर्मित भवनों में सकारात्मक उर्जा का संचार रहता है जिससे व्यक्ति मानसिक रूप से सबल होकर समाज व देश के निर्माण में अपना उत्कृष्ट योगदान प्रदान करता है। हमारे समक्ष वर्तमान समय में अल्प धन, अल्पस्थान में गृहनिर्माण (आवास निर्माण) एक चुनौती है। वास्तुविज्ञान के ज्ञान के अभाव में भवन निर्माण में इस प्रकार की त्रुटियाँ हो जाती हैं जिसके गम्भीर परिणाम होते हैं। जिन भवनों का निर्माण वास्तु के अनुसार नहीं होता है उसमें रहने वाले व्यक्ति अस्वस्थ,अशांत और समृद्धिहीन व संस्कार विहीन हो जाते है संस्कार विहीन व्यक्ति समाज व देश के लिए घातक सिद्ध होते हैं। वास्तु विज्ञान के अनुरूप रहने की जगह बनाना आपके मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। तत्वों में सामंजस्य स्थापित कर, ऊर्जा प्रवाह को अनुकूलित करके, और वास्तु युक्तियों और तकनीकों को शामिल करके, हम एक सकारात्मक और पोषणकारी वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं जो आपके मानसिक कल्याण का समर्थन करता है।

Received **05 August 2025**; Accepted **20 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 02, No. 09, September. 2025

सन्दर्भ संकेत -

1- मस्त्यपुराण,गीताप्रेस गोरखपुर, 254/1-4
2- तथैव 254/37-38
3- तथैव 255/2-3
4- तथैव 254/ 26-27
5- अग्निपुराण, गीताप्रेस, गोरखपुर 104/19-20
6- तथैव 106/18-19
7- तथैव 93/3-4
8- तथैव 101/1-3
9- तथैव 106/1-2
10- हरिवंशपुराण गीताप्रेस, गोरखपुर 2/58 ,3
11- तथैव 2/58,10-15
12- तथैव 2/58,10-18
13- अग्निपुराण,104/19-20, गरूणपुराण 47/29-30,मस्त्यपुराण 269/28-54, भविष्यपुराण गीताप्रेस, गोरखपुर 120/23-35
14- नारदपुराण गीताप्रेस, गोरखपुर भाग 1/13
15- स्कन्दपुराण माहेश्वर खण्ड भाग 235,वैष्णवखण्ड भाग 205, माहेश्वर खण्ड भाग 124
16- वायुपुराण भाग 1.39
17- लिंगपुराण भाग 2.46
18- वृहदवास्तुमाला पृष्ठ 148

Received **05 August 2025**; Accepted **20 September 2025**. Available online: **30 September 2025**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License